होने के कारण उनके लिए कृष्णभावनामृत में अधिक समय तक रहना बहुत कठिन है। अपनी प्रचार क्रियाओं में हमें यह प्रत्यक्ष अनुभव हुआ है कि बहुत से व्यक्ति निहित स्वार्थ से कृष्णभावनामृत को अपनाते हैं और आर्थिक दृष्टि से अपेक्षाकृत सम्पन्न होते ही इसको त्याग कर फिर पूर्ववत् आचरण करने लग जाते हैं। कृष्णभावनामृत में प्रगति केवल श्रद्धा के द्वारा ही हो सकती है। जहाँ तक श्रद्धा की अभिवृद्धि का सम्बन्ध है, भक्तियोग के शास्त्रों में पारंगत दृढ़ श्रद्धावान् भक्त उत्तम अधिकारी है। मध्यम अधिकारी वह है जो शास्त्र-ज्ञान में अधिक पारंगत नहीं है, परन्तु स्वाभाविक रूप में यह दृढ़ विश्वास रखता है कि कृष्णभक्ति (कृष्णसेवा) सर्वोत्तम मार्ग है और इसलिए जो शुद्धभाव से उसे अंगीकार कर लेता है। मध्यम अधिकारी उन कनिष्ठ अधिकारियों से श्रेष्ठ है जिनमें शास्त्र-ज्ञान और श्रद्धा, दोनों का अभाव है, परन्तु जो सत्संग एवं निष्कपटता के द्वारा गुरु-आज्ञापालन के लिए प्रयत्न करता है। कृष्णभावनामृत के कनिष्ठ अधिकारियों का पतन हो सकता है, परन्तु मध्यम अथवा उत्तम भक्त अपनी स्थिति से नहीं गिरता। उत्तम अधिकारी निश्चित रूप से उत्तरोत्तर प्रगति करता हुआ अन्त में लक्ष्य को प्राप्त हो जायगा। कनिष्ठ अधिकारी में यह श्रद्धाभाव तो रहता है कि भगवद्भक्ति बड़ी कल्याणकारी है, परन्तु श्रीमद्भागवत, भगवद्गीता आदि शास्त्रों के आधार पर श्रीकृष्ण का तत्त्वज्ञान उसे नहीं होता। कृष्णभावना के इन कनिष्ठ अधिकारियों की कर्मयोग तथा ज्ञानयोग में भी कुछ-कुछ प्रवृत्ति बनी रहती है और कभी-कभी वे भक्तिमार्ग से विचलित भी हो जाते हैं। परन्तु कर्मयोग, ज्ञानयोग आदि दूषणों से मुक्त होकर वे भी कृष्णभावना के मध्यम अथवा उत्तम अधिकारी बन सकते हैं। श्रीमद्भागवत में श्रीकृष्ण में श्रद्धाभाव को तीन वर्गों में विभक्त किया गया है। ग्यारहवें स्कन्ध में उत्तम, मध्यम एवं कनिष्ठ अनुरक्ति का विशद विवरण है। कृष्णकथा और भक्तियोग की अनुपमेयता का वर्णन सुनकर भी जिनमें श्रद्धा का उदय नहीं होता, जो इनके माहात्म्य को अर्थवाद (स्तुतिमात्र) समझते हैं, उन्हें यह पथ अति दुर्गम लगता है, चाहे वे नाममात्र की भक्ति में लगे भी क्यों न हों। उनके लिए संसिद्धि की कोई आशा नहीं। अतएव भक्तियोग के साधन में श्रद्धा बड़ी महत्त्वपूर्ण है।

मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना।
मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः।।४।।

मया=मेरे द्वारा; **ततम्**=व्याप्त है; **इदम्**=यह; **सर्वम्**=सम्पूर्ण; **जगत्**=सृष्टि; **अव्यक्तमूर्तिना**=मेरे इन्द्रियों से अतीत स्वरूप द्वारा; **मत्स्थानि**=मुझ में हैं; **सर्व-भूतानि**=सम्पूर्ण चराचर; **न**=नहीं; **च**=तथा; **अहम्**=मैं; **तेषु**=उनमें; **अवस्थितः**=स्थित हूँ।

अनुवाद

मेरे प्राकृत इन्द्रियों से अतीत अव्यक्त रूप द्वारा यह सम्पूर्ण जगत् व्याप्त है। सम्पूर्ण चराचर प्राणी मुझमें स्थित हैं, पर मैं उनमें नहीं हूँ।।४।।